अमर चित्र कथा

अर्जुन की कथाएँ

क्र. ५२५| रु. १०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

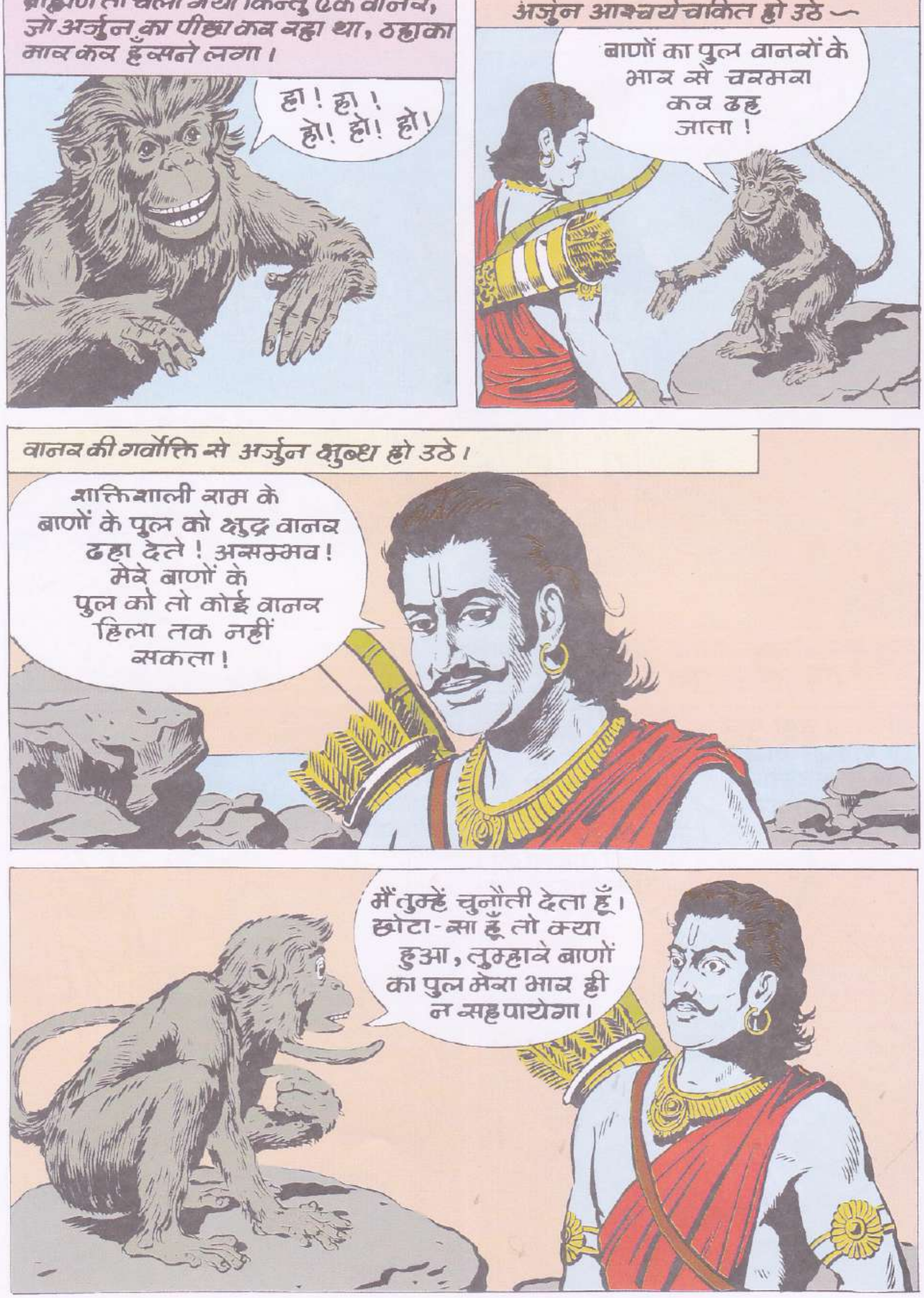
कथा	**चित्र**	**संपादक**
कमला चन्द्रकांत	सी.एम्.विटणकर	अनंत पै

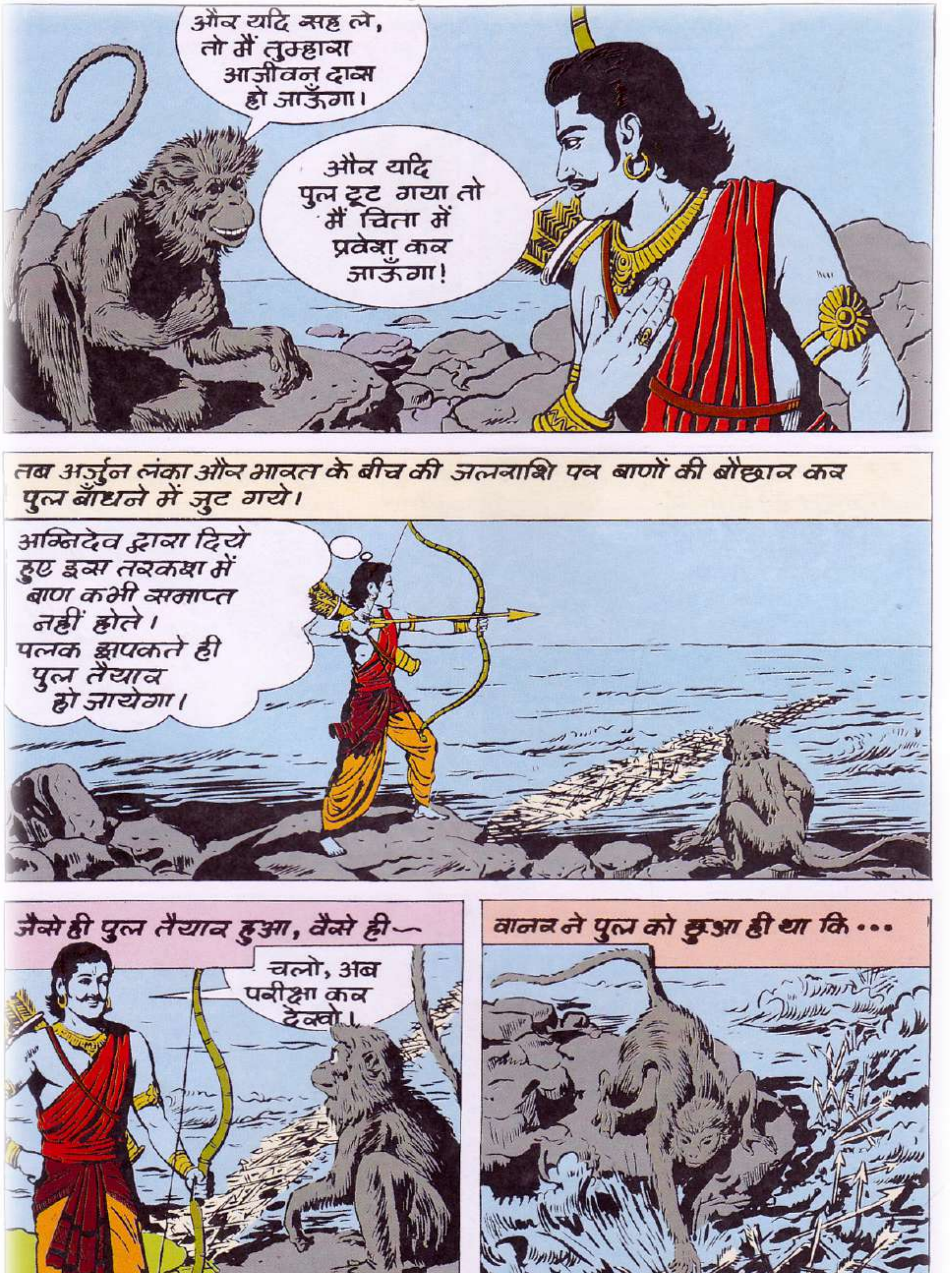
Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-261-8
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com


अर्जुन, वानर और बालक
एक बार अर्जुन देश के विभिन्न तीर्थस्थानों की यात्रा करते हुए रामेश्वरम् * पहुँचे।
और वह रहा पुल जो राम ने वानरों की सहायता से निर्मित किया था।
वानरों की सहायता से ? किन्तु, उनके जैसे निपुण धनुर्धारी को वानरों की आवश्यकता क्यों हुई ?
वे स्वयं बाणों का पुल बना सकते थे। फिर उन्होंने ऐसा क्यों नहीं किया ?

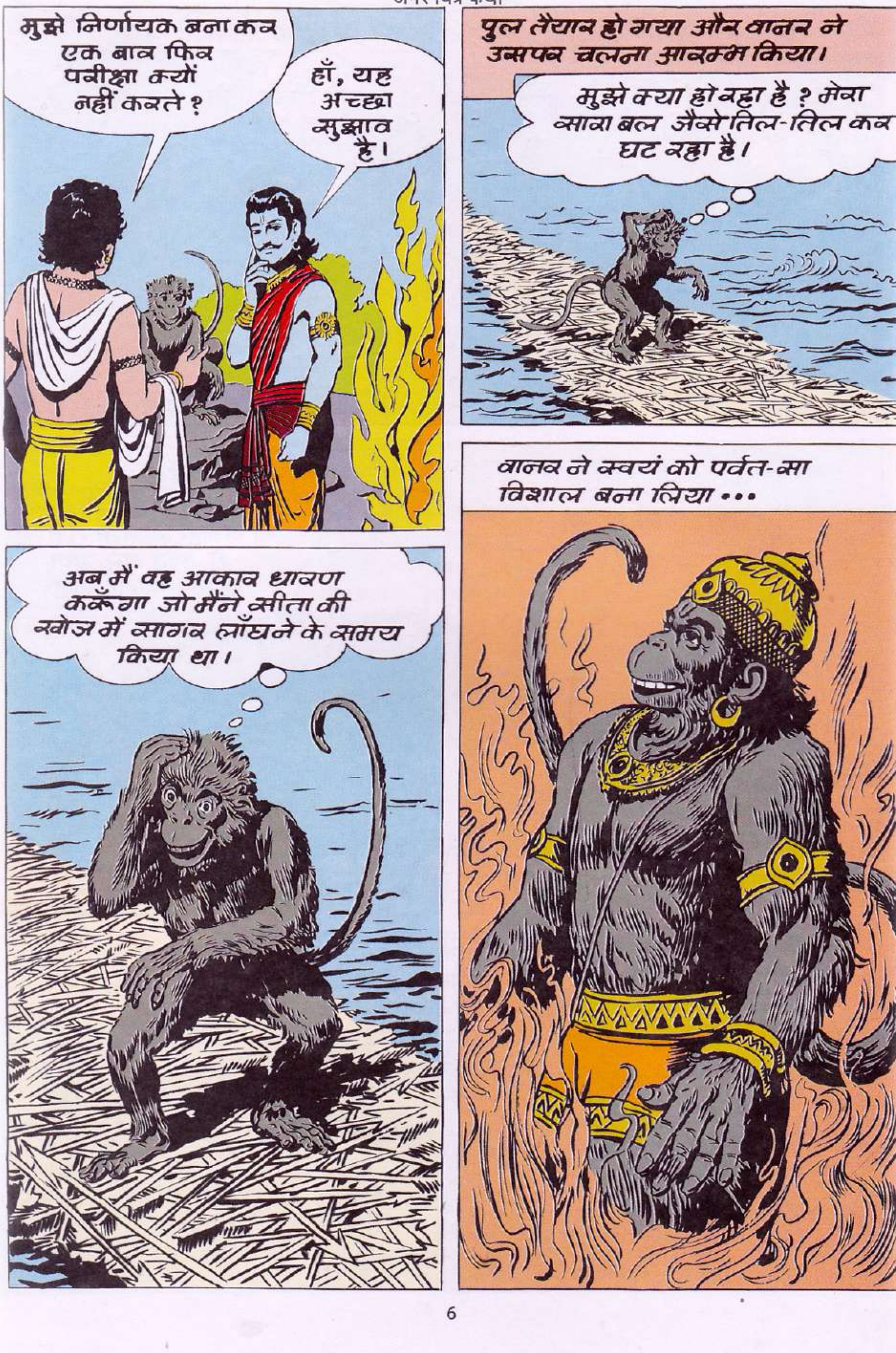
* अब तामिलनाडु में

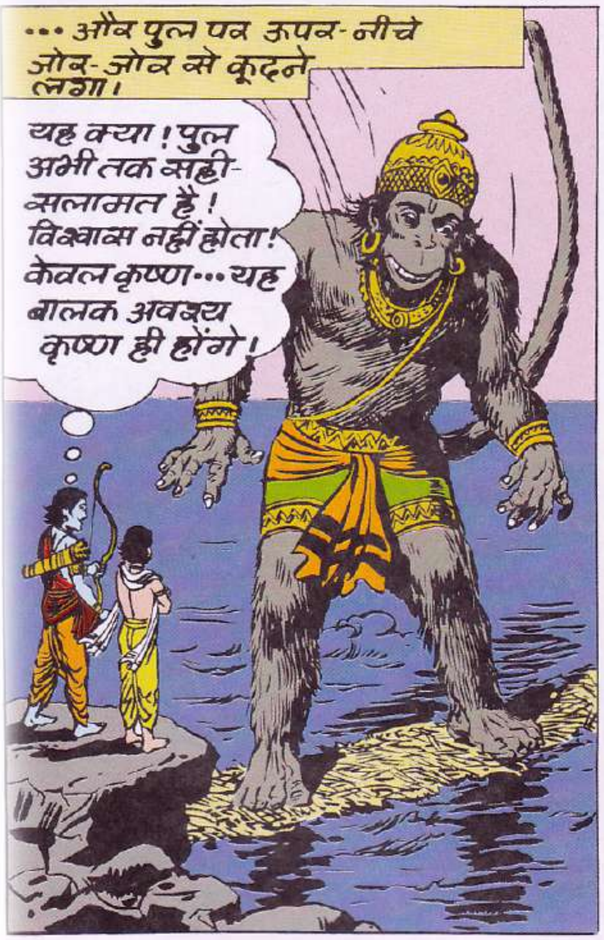

ब्राह्मण तो चला गया किन्तु एक वानर, जो अर्जुन का पीछा कर रहा था, ठहाका मार कर हँसने लगा।
हा! हा! हो! हो! हो!
अर्जुन आश्चर्यचकित हो उठे —
बाणों का पुल वानरों के भार से चरमरा कर ढह जाता!
वानर की गर्वोक्ति से अर्जुन क्षुब्ध हो उठे।
शक्तिशाली राम के बाणों के पुल को क्षुद्र वानर ढहा देते! असम्भव! मेरे बाणों के पुल को तो कोई वानर हिला तक नहीं सकता!
मैं तुम्हें चुनौती देता हूँ। छोटा-सा हूँ तो क्या हुआ, तुम्हारे बाणों का पुल मेरा भार ही न सह पायेगा।


और यदि सह ले,
तो मैं तुम्हारा
आजीवन दास
हो जाऊँगा।
और यदि
पुल टूट गया तो
मैं चिता में
प्रवेश कर
जाऊँगा!
तब अर्जुन लंका और भारत के बीच की जलराशि पर बाणों की बौछार कर
पुल बाँधने में जुट गये।
अग्निदेव द्वारा दिये
हुए इस तरकश में
बाण कभी समाप्त
नहीं होते।
पलक झपकते ही
पुल तैयार
हो जायेगा।
जैसे ही पुल तैयार हुआ, वैसे ही—
चलो, अब
परीक्षा कर
देखो।
वानर ने पुल को छुआ ही था कि ...


... वह ढेर हो गया !
नहीं ! विश्वास नहीं होता ! फिर प्रयत्न कर देखता हूँ।
इस बार अर्जुन ने बाण जल्दी-जल्दी छोड़े ताकि उनमें जरा भी दरार न रह जाये।
अब देखो !
यह आशा से अधिक मजबूत है ! इसपर मुझे कुछ दूर चलना होगा ...
किन्तु उसने कुछ कदम बढ़ाये ही थे कि –
मैं हार गया ! अब चिता तैयार करूँ।

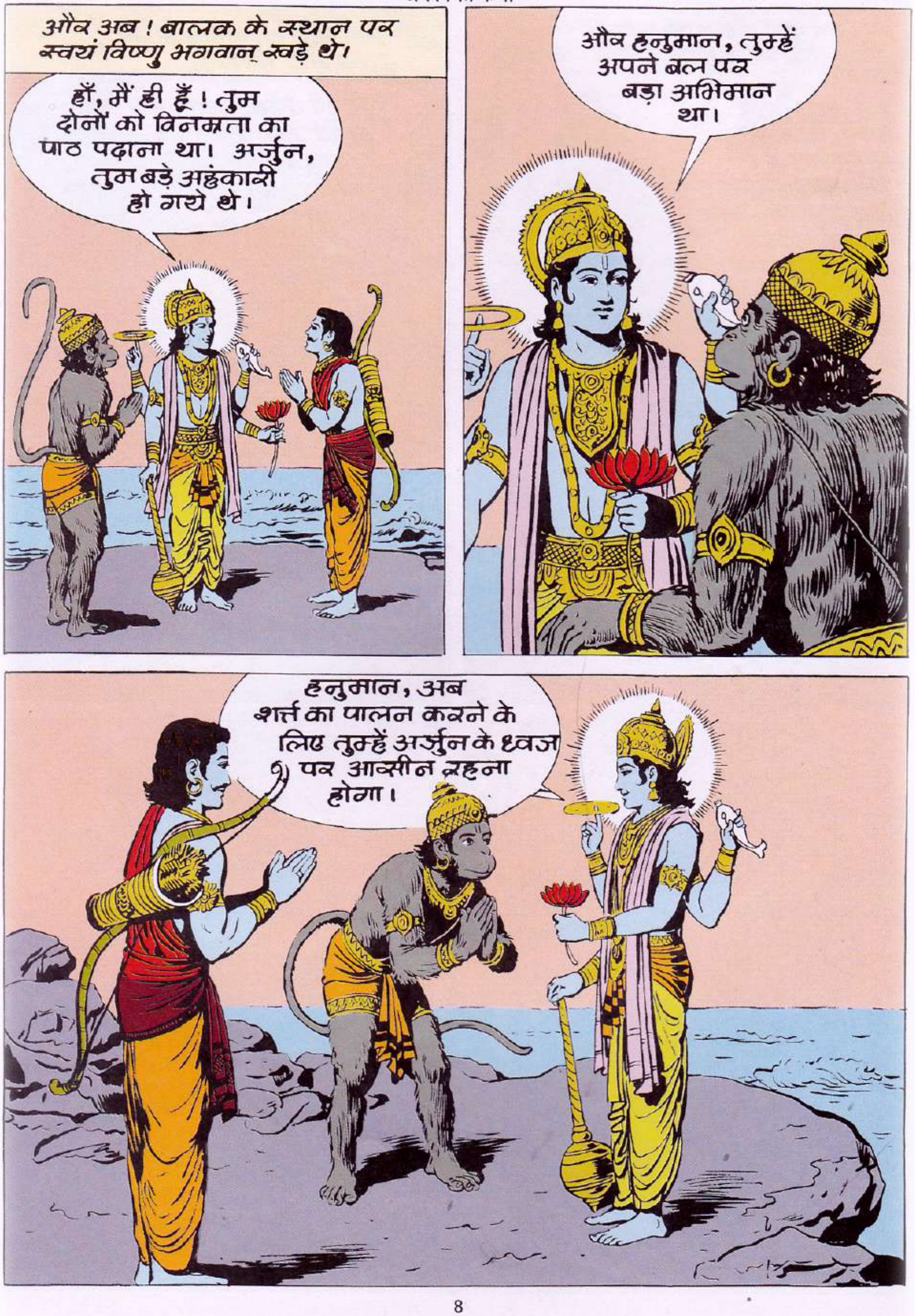

चिता तैयार हो गयी और अर्जुन ज्वाला में कूदने जा रहे थे कि तभी—
रुको!
तुम अपने प्राण क्यों त्याग रहे हो ?
अर्जुन और वानर ने उसे शर्त्त की बात बतायी—
किसी साक्षी के न होनेपर शर्त्त मान्य नहीं होती।
मैं नहीं जानता तुम कौन हो और मेरे प्राण क्यों बचाना चाहते हो? पर...
...मेरा विचार है कि तुम सत्यप्रियता के कारण नहीं, बल्कि दया वश ऐसा कह रहे हो।
तुम कैसे कह सकते हो कि पुल वानर के ही भार से टूटा? इसका फैसला करनेवाला कोई साक्षी तो मौजूद था नहीं!


मुझे निर्णायक बना कर एक बार फिर परीक्षा क्यों नहीं करते ?
हाँ, यह अच्छा सुझाव है।
पुल तैयार हो गया और वानर ने उसपर चलना आरम्भ किया।
मुझे क्या हो रहा है ? मेरा सारा बल जैसे तिल-तिल कर घट रहा है।
अब मैं वह आकार धारण करूँगा जो मैंने सीता की खोज में सागर लाँघने के समय किया था।
वानर ने स्वयं को पर्वत-सा विशाल बना लिया •••


••• और पुल पर ऊपर-नीचे जोर-जोर से कूदने लगा।
यह क्या! पुल अभी तक सही-सलामत है! विश्वास नहीं होता! केवल कृष्ण••• यह बालक अवश्य कृष्ण ही होंगे।


उसी समय, वानर ने भी सत्य भाँप लिया।
मैं भी कैसा दंभी मूर्ख हूँ! ये अवश्य स्वयं प्रभु हैं!


राम!
कृष्ण!


और अब ! बालक के स्थान पर स्वयं विष्णु भगवान् खड़े थे।
हाँ, मैं ही हूँ ! तुम दोनों को विनम्रता का पाठ पढ़ाना था। अर्जुन, तुम बड़े अहंकारी हो गये थे।
और हनुमान, तुम्हें अपने बल पर बड़ा अभिमान था।
हनुमान, अब शर्त का पालन करने के लिए तुम्हें अर्जुन के ध्वज पर आसीन रहना होगा।


अर्जुन की इन्द्र पर विजय
एक बार एक राजा ने बारह वर्ष तक यज्ञ किया जिसमें निरन्तर अग्नि को घी की आहुति दी गयी।
अन्त में, जब यज्ञ समाप्त हुआ, अग्नि देव व्याकुल हो उठे।
मैं इतना सुस्त और क्षीण क्यों अनुभव कर रहा हूँ ? पीला क्यों पड़ गया हूँ ? पहले जैसी आभा क्यों नहीं रही मेरी ?
वे ब्रह्मा के निवास पर पहुँचे।
भगवन्, अपना खोया हुआ तेज और शक्ति पुनः प्राप्त करने के लिए मैं क्या करूँ ?
इतने वर्षों तक तुम्हें जो घी प्राप्त हुआ है उसने तुम्हें रोगी बना दिया है।


किन्तु चिन्ता न करो। खाण्डव वन को अपना आहार बनाने से तुम्हें खोया हुआ तेज़ पुनः प्राप्त हो जायेगा।
अग्निदेव ने शीघ्र ही खाण्डव वन पहुँच कर धधकना आरम्भ कर दिया। यह देख कर इन्द्र व्यग्र हो उठे।
यदि मैंने इस विषय में कुछ रोक-थाम न की तो मेरे मित्र, नागराज तक्षक अपने अनुयायियों सहित जल कर भस्म हो जायेंगे!
अतः इन्द्र ने घनघोर वर्षा आरम्भ कर दी।


अग्निदेव फिर ब्रह्मा के पास पहुँचे।
भगवन, इन्द्र मेरा शमन करने पर तुले हैं! मैं क्या करूँ?


तुम्हें केवल दो व्यक्ति सहायता दे सकते हैं : शूरवीर योद्धा, कृष्ण और अर्जुन। उनके पास जाओ। आजकल वे खाण्डव वन के निकट ही हैं।


उस समय, कृष्ण और अर्जुन यमुना के तट पर विहार कर रहे थे।
इस वर्ष असाधारण गर्मी पड़ रही है। शरीर मानो अग्नि में फुँका जा रहा है!


वास्तव में ब्राह्मण के भेष में अग्निदेव पास ही मौजूद थे।
हाँ! अवश्य ही वे दोनों पुरुषों में श्रेष्ठ और योद्धाओं में शिरोमणि, कृष्ण और अर्जुन होंगे।


मैं भूखा ब्राह्मण हूँ। मुझे ढेर-सा भोजन दे कर तृप्त कीजिए।
कहिए, ब्राह्मणदेव, आप क्या खाना चाहते हैं? हम अवश्य आपकी इच्छा पूर्ण करने का प्रयास करेंगे।


तब अग्नि ने उन्हें सारी बात बता दी कि वे कौन हैं और वहाँ क्यों आये हैं –
हम अनेक इन्द्रों से निपट सकते हैं, किन्तु हमारी क्षमता के अनुरूप हमारे पास शस्त्रास्त्र नहीं हैं। हमें एक अच्छे रथ की भी आवश्यकता होगी।
वह सब मैं तुम्हें दूँगा।


अग्निदेव ने वरुण का ध्यान किया। वे आ पहुँचे।
अर्जुन के लिए अक्षय तरकश सहित शक्तिशाली गाण्डीव धनुष और रथ ले कर आओ तथा कृष्ण के लिए सुदर्शन चक्र।

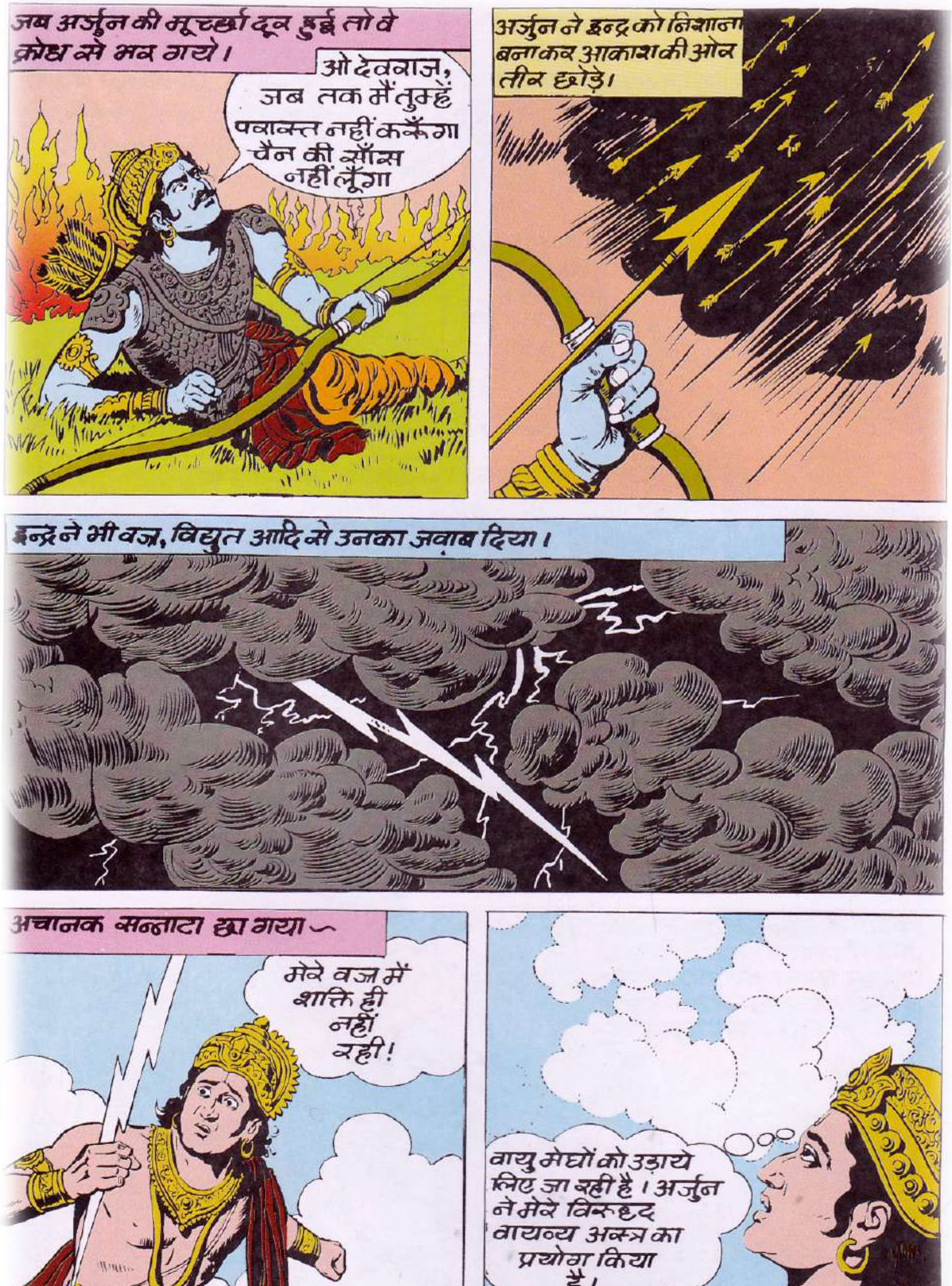

पलक झपकते ही, वरुण ने रथ और सभी शस्त्रास्त्र उनके सामने रख दिये।
ये सब तुम्हारे लिए हैं।
हे अग्निदेव! इन शस्त्रास्त्रों के होते हुए कोई हमसे लोहा न ले सकेगा। अब आप इच्छानुसार भोजन करिए। वन को लपटों से घेर लीजिए।


उनकी शह पा कर आग्नि ने अपना स्वरूप बदल लिया और सात लपटों में विभाजित हो कर वन को चारों ओर से घेर लिया। वन धू-धू कर जल उठा। ऊँची-ऊँची लपटें आकाश छूने लगीं। तब कृष्ण ने अर्जुन से कहा –
मैं वनवासियों से निपट लूँगा। तुम इन्द्र और अन्य देवताओं को सम्हालो।
वन की दोनों सीमाओं पर वे दोनों तैनात हुए ही थे कि आकाश काले-काले बादलों से ढँक गया।
वज्रगर्जन! इन्द्र ने फिर से वार किया है!
अगले क्षण मूसलाधार बरसात होने लगी।
धुएँ का घटाटोप अंधकार, कौंधती हुई बिजली, आँधी और पानी – सारा वन बड़ा भयानक लग रहा था।
मुझे शीघ्रता करनी चाहिए! अन्यथा अग्निदेव का शमन हो जायेगा!
अर्जुन ने इन्द्र की वर्षा की बौछार रोकने के लिए अपने बाणों की ...


•••ऐसी बौछार की कि सारा वन बाणों की चादर से ढँक गया।
ठीक है! अब पानी की एक बूँद भी अग्नि को न छू पायेगी। एक जीव भी न बच पायेगा!

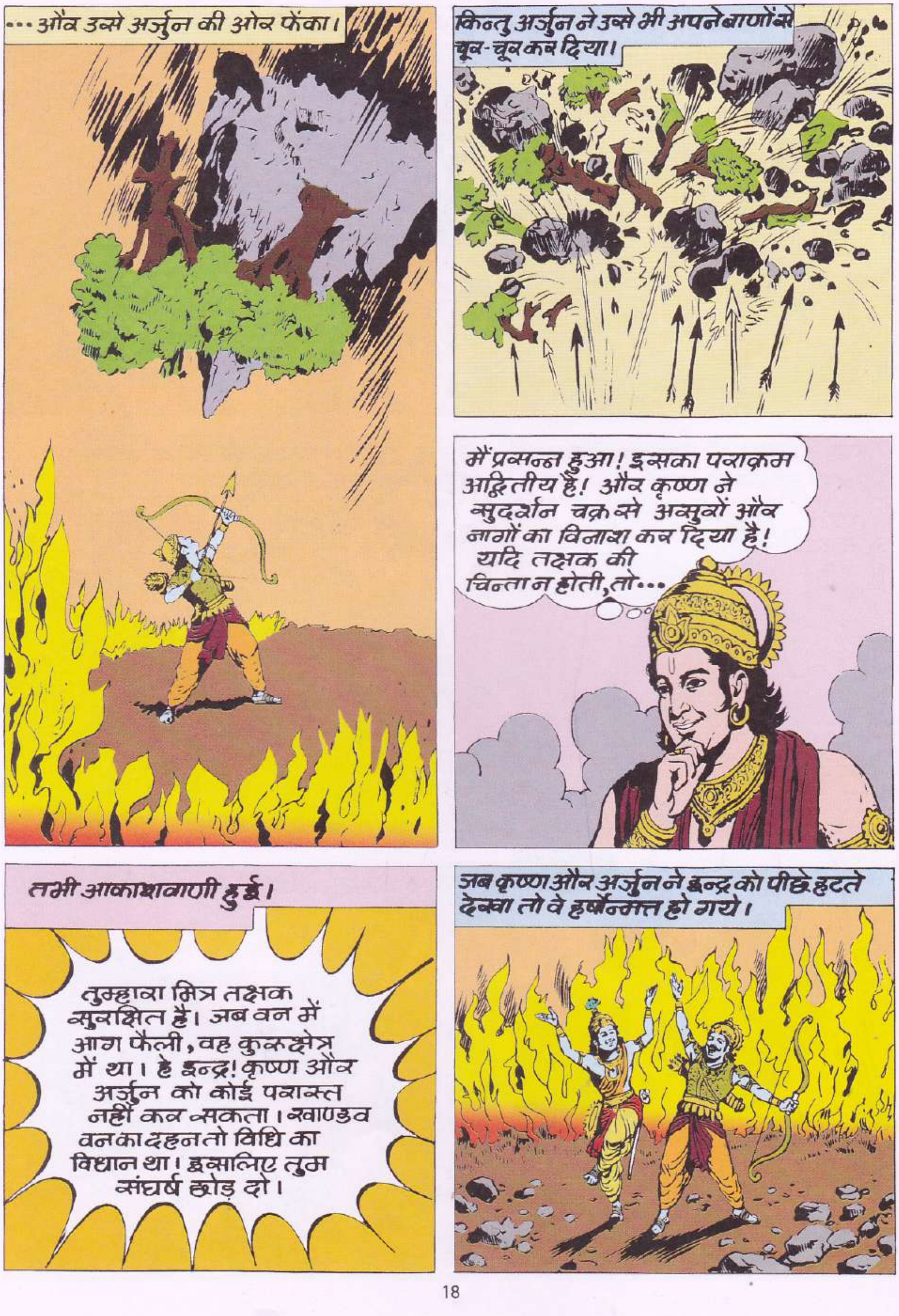

परंतु, इन्द्र ने अगले क्षण प्रचण्ड बवण्डर चला कर •••


••• अर्जुन पर आघात किया।


जब अर्जुन की मूर्च्छा दूर हुई तो वे क्रोध से भर गये।
ओ देवराज, जब तक मैं तुम्हें परास्त नहीं करूँगा चैन की साँस नहीं लूँगा
अर्जुन ने इन्द्र को निशाना बनाकर आकाश की ओर तीर छोड़े।
इन्द्र ने भी वज्र, विद्युत आदि से उनका जवाब दिया।
अचानक सन्नाटा छा गया –
मेरे वज्र में शक्ति ही नहीं रही!
वायु मेघों को उड़ाये लिए जा रही है। अर्जुन ने मेरे विरुद्ध वायव्य अस्त्र का प्रयोग किया है!


फिर देखते ही देखते आकाश साफ हो गया। सूर्य पूर्ण रूप से चमक उठा और तीव्र गति से समीर चलने लगा। आग पुनः धधक उठी। तभी अचानक–
कृष्ण! देखो! इन्द्र और देवता इधर चढ़े आ रहे हैं!
और वह देखो! उधर से नाग और असुर बढ़े आ रहे हैं!
...और मैं असुरों और नागों से भिड़ता हूँ।
कृष्ण ने अपना सुदर्शन चक्र हवा में उछाला। बस नाग और असुर घबरा कर भाग खड़े हुए। इधर अर्जुन ने देवताओं के आक्रमण का इतनी पटुता से उत्तर दिया...

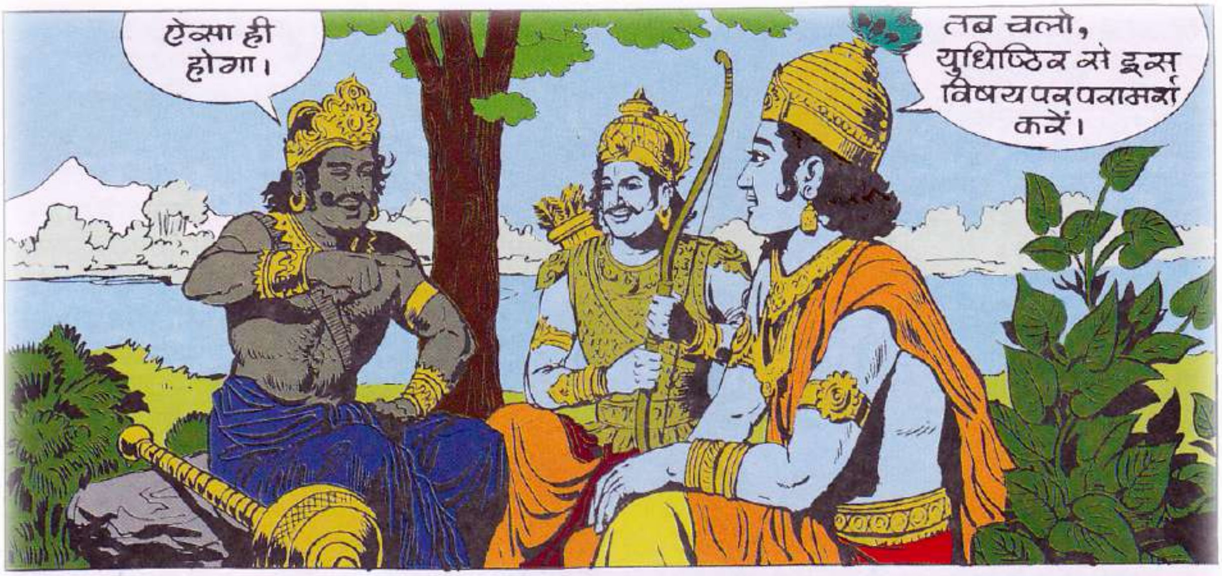

••• कि उनके छक्के छूट गये। इन्द्र मन ही मन अर्जुन की सराहना करने लगे।
मेरे देवतागण भयभीत हो रण में पीठ दिखा रहे हैं! अर्जुन का पराक्रम असीम है।
फिर भी, इन्द्र ने आकाश से पत्थरों की वर्षा आरम्भ कर दी।
अब तुम्हारा पराक्रम देखूँ।
किन्तु अर्जुन ने पत्थरों की वर्षा को बाणों बड़ी निपुणता से रोक दिया।
तब इन्द्र ने मंदर पर्वत के शिखर को उखाड़ा •••


...और उसे अर्जुन की ओर फेंका।
किन्तु अर्जुन ने उसे भी अपने बाणों से चूर-चूर कर दिया।
मैं प्रसन्न हुआ! इसका पराक्रम अद्वितीय है। और कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से असुरों और नागों का विनाश कर दिया है! यदि तक्षक की चिन्ता न होती, तो...
तभी आकाशवाणी हुई।
तुम्हारा मित्र तक्षक सुरक्षित है। जब वन में आग फैली, वह कुरुक्षेत्र में था। हे इन्द्र! कृष्ण और अर्जुन को कोई परास्त नहीं कर सकता। खाण्डव वन का दहन तो विधि का विधान था। इसलिए तुम संघर्ष छोड़ दो।
जब कृष्ण और अर्जुन ने इन्द्र को पीछे हटते देखा तो वे हर्षोन्मत्त हो गये।


तभी –
देखो, वह रहा असुर मय! उस गुफा में छिपा हुआ बैठा था! अभी उसे सुदर्शन से मार गिराता हूँ।
किन्तु उन्होंने सुदर्शन चक्र उठाया ही था...
...कि असुर ने दौड़ कर अर्जुन की शरण ली।
हे अर्जुन, मेरी रक्षा करो!
तुम मेरी शरण में आये हो तो तुम्हें संरक्षण अवश्य मिलेगा।
अर्जुन ने इसे अभय वचन दिया है। इसे छोड़ दीजिए, अग्निदेव!

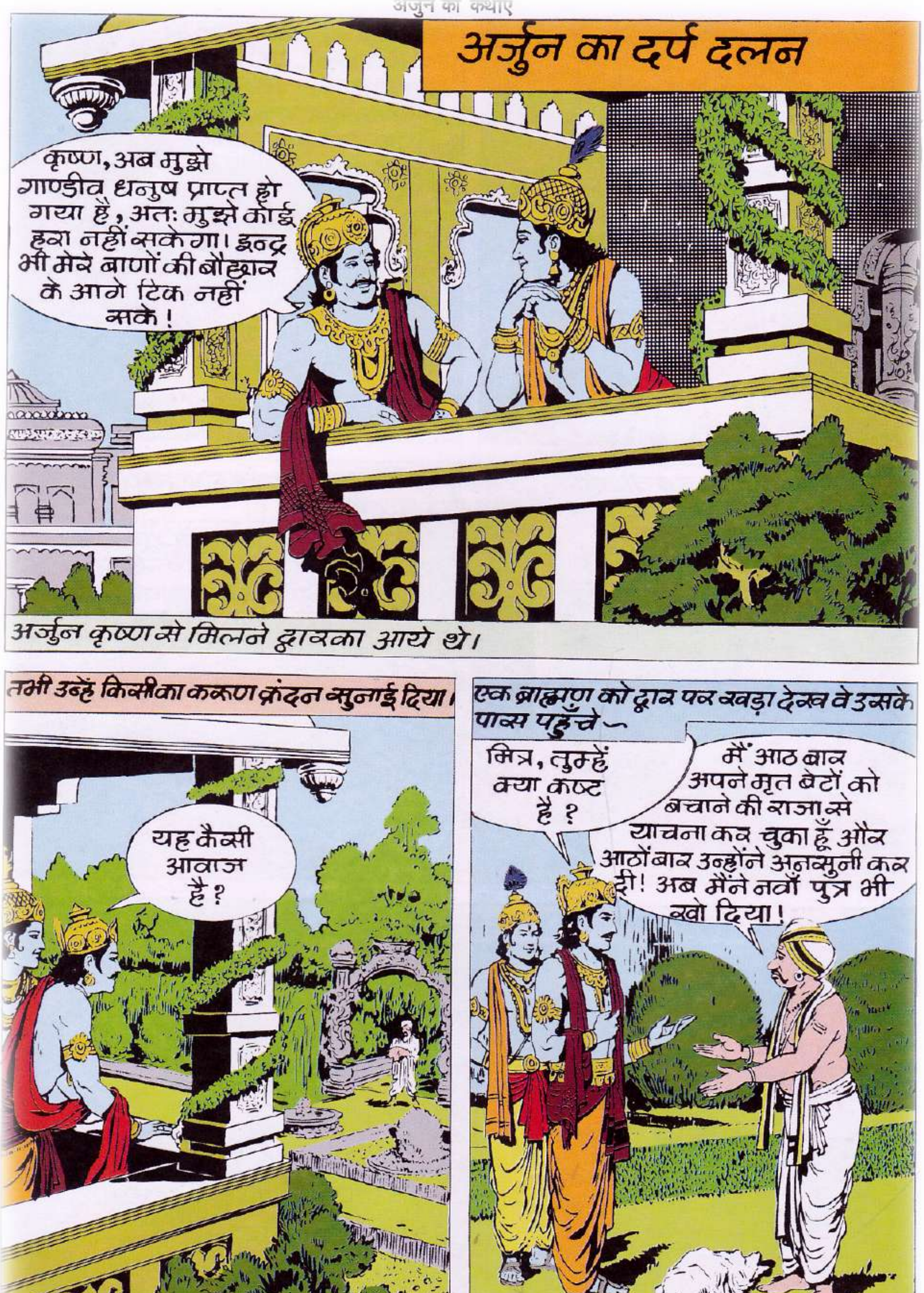

जब सब शांत हो गया, तो अग्निदेव पन्द्रह दिनों तक धधकते रहे और उन्हें अपना खोया तेज़ पुन: प्राप्त हो गया।
तब इन्द्र वहाँ आये –
अपने बल और पराक्रम के लिए तुम दोनों एक-एक वरदान के अधिकारी हो। मानवों के लिए अलभ्य किसी वर की याचना करो।
मुझे सब शस्त्रास्त्र और उनके उपयोग की विधियों का ज्ञान प्रदान करें।
अर्जुन के साथ मेरी मैत्री सदैव अटूट रहे।
तथास्तु, कृष्ण, और तुम अर्जुन, शस्त्रास्त्रों को तब प्राप्त करोगे, जब तुम्हें उनकी सर्वाधिक आवश्यकता होगी।


जब इन्द्र चले गये तब अग्नि की बारी आयी वरदान देने की —
मैं तुम्हारा आभारी हूँ। मेरी शक्ति से, तुम जहाँ जाने की इच्छा करोगे वहाँ तुरंत ही पहुँच जाओगे।
अग्नि के जाने के बाद कृष्ण, अर्जुन और मय नदी-तट पर बैठे आराम करने लगे।
हे अर्जुन, तुमने मुझे कृष्ण और अग्नि के कोप से बचाया है। बताओ, मैं तुम्हारी क्या सेवा करूँ?
जैसे हम तुम्हारे प्रति सद्भाव रखते हैं, मय, वैसे ही तुम भी हमारे प्रति रखो।
परंतु मैं आपके लिए कुछ करना चाहता हूँ।
अच्छा, कृष्ण, हम अपने मित्र से क्या माँग सकते हैं?
मय, तुम असुरों के महान् वास्तुकार हो। युधिष्ठिर के लिए एक सभा भवन का निर्माण क्यों नहीं करते? ऐसा भव्य सभा भवन जो अद्वितीय हो, अनुपम हो। जो वास्तुकला के सारे प्रतिमानों से भी श्रेष्ठ हो।

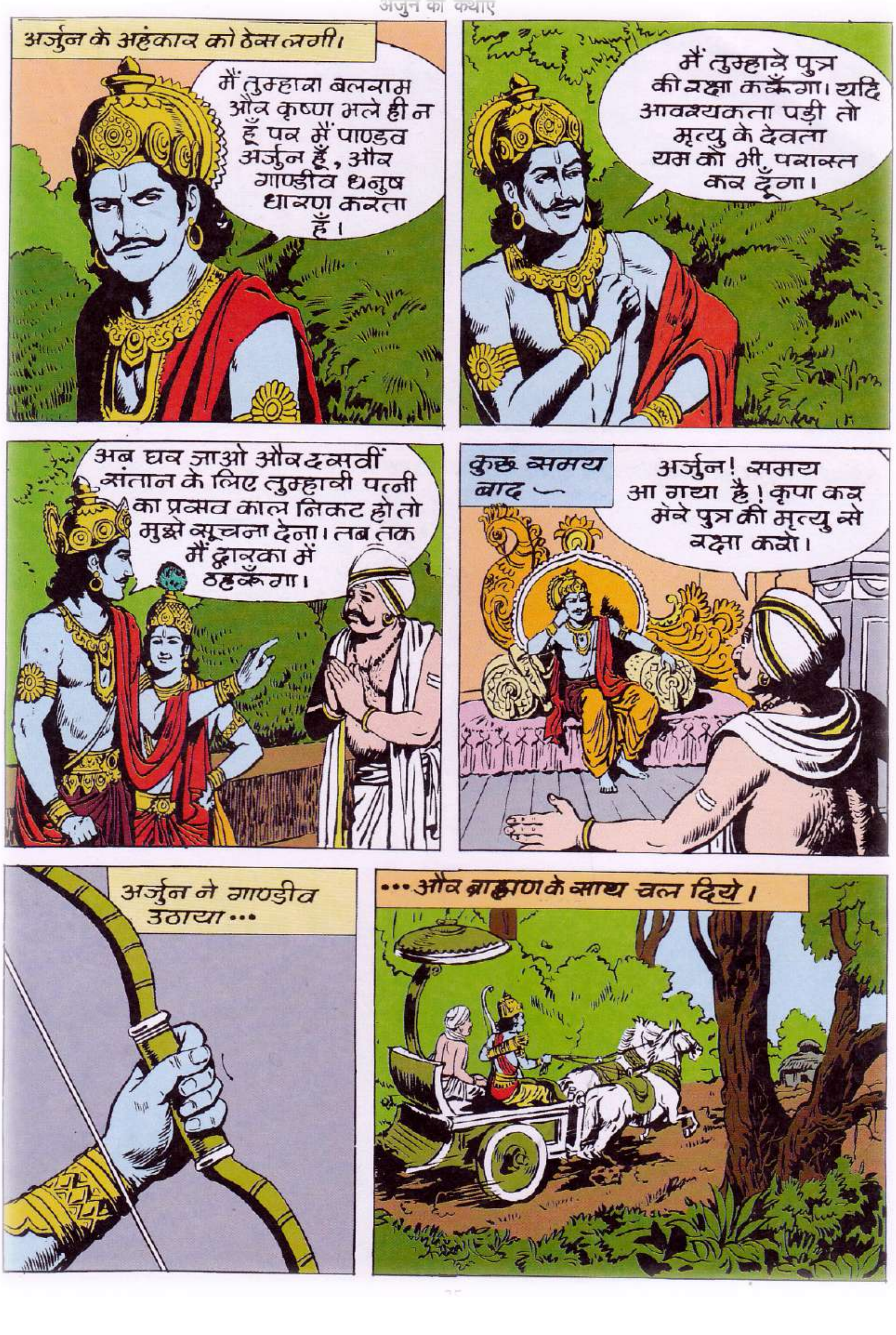


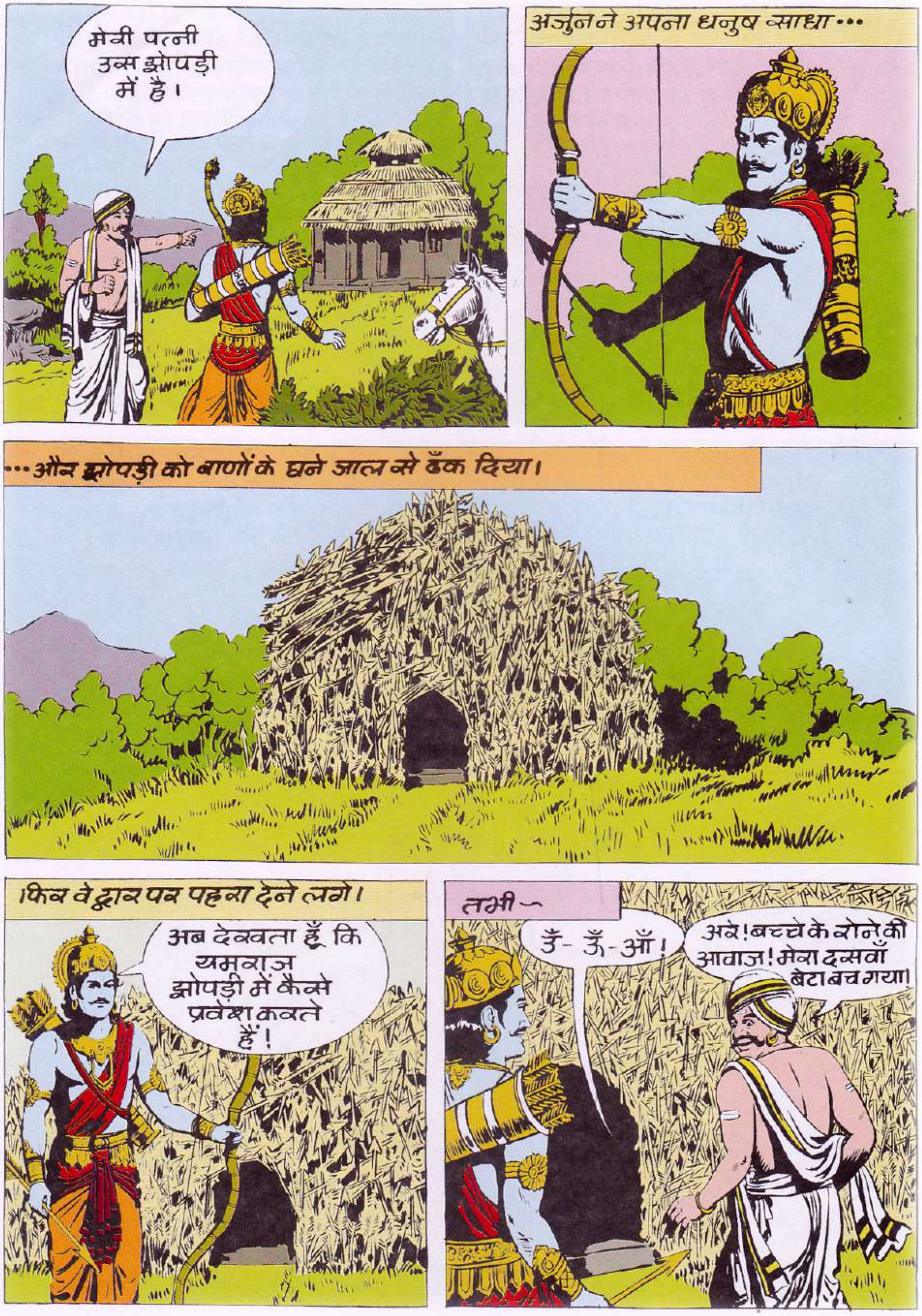


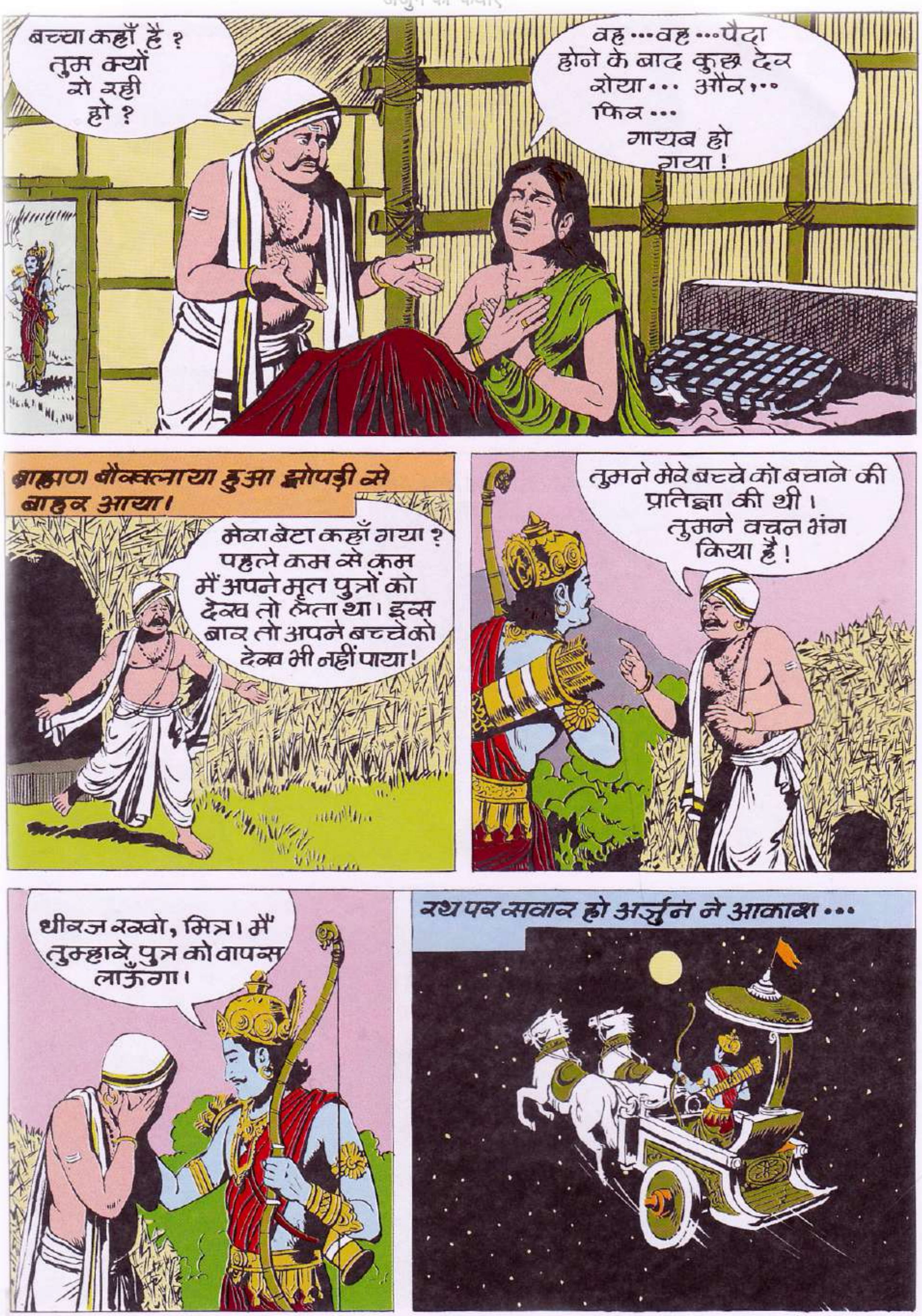
और इस प्रकार युधिष्ठिर को प्राप्त हुआ वह भव्य सभाभवन जो उनके चचेरे भाई, कौरवों की आँखों में चुभने लगा। फिर तो ईर्ष्या की यह ज्वाला ऐसी भड़की कि कौरवों ने छल-कपट द्वारा युधिष्ठिर का राज्य ही हथिया लिया।


अर्जुन का दर्प दलन
कृष्ण, अब मुझे गाण्डीव धनुष प्राप्त हो गया है, अतः मुझे कोई हरा नहीं सकेगा। इन्द्र भी मेरे बाणों की बौछार के आगे टिक नहीं सके!
अर्जुन कृष्ण से मिलने द्वारका आये थे।
तभी उन्हें किसीका करुण क्रंदन सुनाई दिया।
यह कैसी आवाज़ है?
एक ब्राह्मण को द्वार पर खड़ा देख वे उसके पास पहुँचे –
मित्र, तुम्हें क्या कष्ट है?
मैं आठ बार अपने मृत बेटों को बचाने की राजा से याचना कर चुका हूँ और आठों बार उन्होंने अनसुनी कर दी! अब मैंने नवाँ पुत्र भी खो दिया!


यद्यपि वे शूरवीर हैं, तथापि विलास-प्रेमी हैं। यदि उनमें सद्भाव होता तो क्या वे इतने निष्ठुर हो जाते ?
एक राजा को अपनी प्रजा को सब विपदाओं, यहाँ तक कि मृत्यु से बचाना चाहिए। मैं आप-से भीख माँगता हूँ, मेरा बेटा मुझे वापस ला दीजिए।
कृष्ण उत्तर क्यों नहीं देते ? क्या वे दया, करुणा आदि खो बैठे हैं ?
जब ब्राह्मण विलाप करता रहा तब तो अर्जुन और सह न सके।
दुखी न हो, मित्र। मैं तुम्हारे अगले पुत्र की रक्षा करूँगा। और यदि न कर सका तो वचन-भंग करने के कारण जीते-जी चिता में प्रवेश कर जाऊँगा।
ब्राह्मण ने संशय भरी दृष्टि से अर्जुन को देखा।
जब बलराम, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध जैसे सूरमा मेरे बेटों को बचा न सके, तो तुम बचा सकोगे ?


अर्जुन के अहंकार को ठेस लगी।
मैं तुम्हारा बलराम और कृष्ण भले ही न हूँ पर मैं पाण्डव अर्जुन हूँ, और गाण्डीव धनुष धारण करता हूँ।
मैं तुम्हारे पुत्र की रक्षा करूँगा। यदि आवश्यकता पड़ी तो मृत्यु के देवता यम को भी परास्त कर दूँगा।
अब घर जाओ और दसवीं संतान के लिए तुम्हारी पत्नी का प्रसव काल निकट हो तो मुझे सूचना देना। तब तक मैं द्वारका में ठहरूँगा।
कुछ समय बाद —
अर्जुन! समय आ गया है! कृपा कर मेरे पुत्र की मृत्यु से रक्षा करो।
अर्जुन ने गाण्डीव उठाया ...
... और ब्राह्मण के साथ चल दिये।


मेरी पत्नी उस झोपड़ी में है।
अर्जुन ने अपना धनुष साधा ...
... और झोपड़ी को बाणों के घने जाल से ढँक दिया।
फिर वे द्वार पर पहरा देने लगे।
अब देखता हूँ कि यमराज झोपड़ी में कैसे प्रवेश करते हैं!
तभी –
उँ- उँ- आँ!
अरे! बच्चे के रोने की आवाज़! मेरा दसवाँ बेटा बच गया!


बच्चा कहाँ है ? तुम क्यों रो रही हो ?
वह ...वह ...पैदा होने के बाद कुछ देर रोया ... और ... फिर ... गायब हो गया !
ब्राह्मण बौखलाया हुआ झोपड़ी से बाहर आया।
मेरा बेटा कहाँ गया ? पहले कम से कम मैं अपने मृत पुत्रों को देख तो लेता था। इस बार तो अपने बच्चे को देख भी नहीं पाया !
तुमने मेरे बच्चे को बचाने की प्रतिज्ञा की थी। तुमने वचन भंग किया है !
धीरज रखो, मित्र। मैं तुम्हारे पुत्र को वापस लाऊँगा।
रथ पर सवार हो अर्जुन ने आकाश ...


•••और पाताल छान डाले, किन्तु उन्हें ब्राह्मण के पुत्र का पता न लगा।
अब वापस लौट कर प्राण त्याग दूँ। मैं कुछ न कर सका!
देखता हूँ कि तुम खाली हाथ लौटे हो। अब क्या करने आये हो?
प्रतिज्ञा का शेष भाग पूरा करने।
जल्दी ही अर्जुन ने चिता तैयार की।


वे उसमें प्रवेश करने जा ही रहे थे कि ~
ठहरो, अर्जुन!
स्वयं को दण्ड न दो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि ब्राह्मण के पुत्र कहाँ हैं। मेरे साथ आओ।
अर्जुन हैरान-से रथ पर जा बैठे ~
हम पश्चिम की ओर जायेंगे।
वे रथ दौड़ाते-दौड़ाते रात्रि के प्रदेश में जा पहुँचे।
आह! कुछ भी तो दिखाई नहीं देता! कृष्ण, तुम यहीं हो न? क्या रथ रुक गया है?
घोड़े घुप-अन्धकार के कारण थम गये हैं।


कृष्ण ने सुदर्शन चक्र उठाया –
जाओ, सुदर्शन! हमारा पथ प्रकाशित करो।
सुदर्शन चक्र तेजी से घूमता हुआ आगे बढ़ने लगा। उसकी आभा से गहन अन्धकार में भी राह प्रकाशमान बन गयी।
शीघ्र ही वे विष्णु के आवास, क्षीर सागर में जा पहुँचे। कृष्ण ने भगवान को, जिनका वे स्वयं एक अंश थे, प्रणाम किया।
अर्जुन क्षणभर के लिए चकित रह गये। फिर वे भी श्रद्धा से नतमस्तक हो गये।
मैंने इन ब्राह्मण बालकों को यहाँ इसीलिए बुलवाया था कि तुम्हें आने का अवसर मिले। असुरों का विनाश करो और पृथ्वी पर धर्म की रक्षा करो। यही तुम्हारा जीवन लक्ष्य है। इसे पूर्ण कर तुरंत मेरे पास वापस आ जाओ।


हूँ! तो कृष्ण, तुम प्रारम्भ से ही जानते थे कि बच्चे यहाँ हैं! तभी तो तुम मौन और निर्विकार थे।
और तब अर्जुन समझ गये कि यह नाटक क्यों खेला गया था!
हे कृष्ण, अब मैं समझ गया। पुरुष में जितना भी बल और पौरुष होता है, वह सब ईश्वर की कृपा से संभव होता है। मुझे मेरे दंभ के लिए क्षमा करो।
भगवान् विष्णु से विदा ले कर, कृष्ण ने ब्राह्मण के पुत्रों को रथ पर बैठाया और अर्जुन के साथ द्वारका की ओर प्रस्थान किया।
भगवान् में श्रद्धा और विनयशील व्यवहार ही हमें युद्ध में विजयी बनाते हैं, अर्जुन, न कि अहंकार और मात्र रण-कौशल।

अर्जुन की कथाएं

महाभारत के नायक, अर्जुन जन्मजात योद्धा थे। उनमें बल, साहस और एकाग्रता का अभूतपूर्व संगम था। उनका नाम वीरता और पराक्रम का पर्याय था। कृष्ण के प्रति अर्जुन की श्रद्धा, राम के प्रति हनुमान की श्रद्धा जितनी ही थी। इस संग्रह की पहली कथा दक्षिण भारत की अर्जुन और हनुमान की भेंट से संबंधित एक लोक कथा पर आधारित है। दोनों को अंत में ज्ञान होता है कि कृष्ण और राम एक ही हैं। धनुर्विद्या में प्रवीण, गुरु द्रोणाचार्य से अर्जुन ने शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने देवताओं से आशीर्वाद स्वरूप बहुत से शस्त्रास्त्र प्राप्त किए थे। परंतु उन्हें अजेय बनाने का श्रेय अग्निदेव से मिले गाण्डीव नामक धनुष को है। अर्जुन के ममेरे भाई कृष्ण, उनके अभिन्न मित्र थे। अर्जुन सदैव कृष्ण से परामर्श करते थे। कुरुक्षेत्र के युद्ध में कृष्ण अर्जुन के सारथी बने। अहंकार में चूर होने पर अर्जुन को कृष्ण प्रेम और दृढ़ता के साथ सही मार्ग का भान कराते हैं। ये घटनाएं इस संग्रह की तीसरी कथा में उल्लिखित हैं।

ISBN 978-81-8482-26